परमेश्वर के वचन को सीखना कभी मत छोड़ो

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 1

परमेश्वर के वचन की तुलना बीज से की गई है (लूका 8:11)। बीज में हमेशा जीवन होता है, और जब उसे किसी मनुष्य के भीतर बोया जाता है, तो उसका जीवन उसी व्यक्ति के भीतर उसके बढ़ने के अनुसार प्रकट होने लगता है। जैसे-जैसे वह बीज बढ़ता है, वैसे-वैसे उस व्यक्ति का स्वभाव भी धीरे-धीरे बदलता जाता है। याद रखिए—यह परिवर्तन मनुष्य अपने प्रयासों से नहीं करता, बल्कि वह बीज जो उसके भीतर बोया गया है, वही उसे एक अवस्था से दूसरी अवस्था तक बदलता है, उसके बढ़ने के अनुसार।

प्रभु यीशु ने यह दृष्टांत दिया:

मरकुस 4:26-29
“परमेश्वर का राज्य ऐसा है, जैसे कोई मनुष्य भूमि में बीज डाले,
और वह रात-दिन सोता और उठता रहे, और वह बीज अंकुरित हो और बढ़े—कैसे, यह वह स्वयं नहीं जानता।
पृथ्वी अपने आप फल लाती है—पहिले पत्ती, फिर बाल, और फिर
बाल में पूरा दाना।
परन्तु जब फल पक जाता है, तो वह तुरन्त हंसिया लगाता है, क्योंकि कटनी का समय आ पहुँचा है।”

यह दृष्टांत इस बात को समझाता है कि परमेश्वर का वचन मनुष्य के

परमेश्वर के वचन को सीखना कभी मत छोड़ो

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 2

भीतर कैसे बढ़ता है। सबसे पहले यह बीज के रूप में शुरू होता है—जब कोई व्यक्ति उस वचन को अपने भीतर आने देता है। यह तब होता है जब वह प्रतिदिन वचन सीखने की इच्छा रखता है, परमेश्वर को जानने की लालसा रखता है, और पवित्रशास्त्र का अध्ययन करता है।

धीरे-धीरे, क्योंकि उस बीज को उचित वातावरण मिल जाता है, वह अपने आप बढ़ने लगता है—यहाँ तक कि बोने वाला भी नहीं जान पाता कि यह कैसे बढ़ रहा है। तब उस व्यक्ति के जीवन में परिवर्तन दिखाई देने लगता है—उसके स्वभाव और चाल-चलन बदलने लगते हैं। वह अपने आप सांसारिक बातों से घृणा करने लगता है, जिनसे पहले वह अलग नहीं हो पाता था। यह सब उसके अपने प्रयास से नहीं होता, बल्कि वह स्वयं अनुभव करता है कि उसकी इच्छाएँ बदल रही हैं।

इस अवस्था में, धूम्रपान, शराब, व्यभिचार, अशोभनीय वस्त्र आदि जैसी बातें अपने आप छूटने लगती हैं। उसे लगता है जैसे उसने अपने मन से यह सब छोड़ दिया है, लेकिन वास्तव में वह बीज जो उसके भीतर बढ़ रहा था, वही काम कर रहा होता है।

जैसे-जैसे वह उस बीज को और अच्छा वातावरण देता है—वचन को सीखकर और उसमें बने रहकर—वह बीज पत्ती बन जाता है। इस अवस्था में व्यक्ति का परमेश्वर के प्रति ज्ञान बढ़ने लगता है, बिना उसके जाने ही। उसकी आत्मिक समझ विकसित होती है, और जो बातें वह पहले नहीं समझता था, अब धीरे-धीरे समझने लगता है।

परमेश्वर के वचन को सीखना कभी मत छोड़ो

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 3

अगला चरण है बाल (बालियाँ)। इस अवस्था में व्यक्ति उस स्थिति से बाहर आ जाता है जिसे “हवा से हिलने वाली घास” कहा गया है।

इफिसियों 4:14-15
“ताकि हम आगे को बालक न रहें, जो मनुष्यों की ठग-विद्या और चतुराई से उनके भ्रम के उपायों के अनुसार इधर-उधर उछाले और
हर एक उपदेश की हवा से घुमाए जाते हों;
परन्तु प्रेम में सत्य बोलते हुए, सब बातों में उसी में
बढ़ते जाएँ, जो सिर है, अर्थात् मसीह।”

अब व्यक्ति आत्मिक रूप से दृढ़ हो जाता है। शैतान उसे झूठी शिक्षाओं से भटका नहीं सकता, क्योंकि परमेश्वर का वचन उसके भीतर गहराई से जड़ पकड़ चुका होता है। वह सत्य और असत्य में भेद करना सीख जाता है, क्योंकि पवित्र आत्मा का अभिषेक उसके भीतर स्थिर हो जाता है। इस अवस्था में वह अगले चरण—फल लाने के लिए तैयार हो जाता है।

पका हुआ गेहूँ (परिपक्व अवस्था):
यह वह अवस्था है जहाँ फल प्रकट होते हैं। अब वह वचन जो उसके भीतर बोया गया था, उसे सामर्थ देता है कि वह दूसरों के जीवन में भी वही वचन बोए और फल लाए। परमेश्वर उसे ज्ञान, अनुग्रह और सामर्थ देता है कि वह दूसरों को भी सिखा सके। यह सामर्थ मनुष्य के अपने

परमेश्वर के वचन को सीखना कभी मत छोड़ो

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 4

प्रयास से नहीं आता, बल्कि भीतर से उत्पन्न होता है।

यह बिल्कुल वैसे ही है जैसे एक स्त्री प्रसव के समय पीड़ा को रोक नहीं सकती—वैसे ही जब कोई व्यक्ति इस अवस्था में पहुँचता है, तो वह अपने आप परमेश्वर के लिए फल उत्पन्न करने लगता है।

अन्तिम चरण है कटनी (फसल):
यह वह समय है जब प्रत्येक व्यक्ति के कार्यों का फल स्वयं प्रभु द्वारा लिया जाएगा—और यह संसार के अन्त में होगा।

तो हे भाई/बहन, सोचिए—आपके भीतर कौन-सा बीज बोया गया है? क्या वह परमेश्वर का वचन है या दुष्ट का बीज? और यदि वह परमेश्वर का वचन है, तो वह किस अवस्था में है—पत्ती, बाल या पका हुआ गेहूँ?

यदि आप अब भी पापों—जैसे नशा, व्यभिचार, धूम्रपान, चुगली आदि—पर विजय नहीं पा रहे हैं, तो समझ लीजिए कि वह बीज आपके भीतर मर चुका है, क्योंकि आपने उसे बढ़ने के लिए उचित वातावरण नहीं दिया।

याद रखें—जो कोई भी प्रतिदिन परमेश्वर के वचन को सीखता और उसे अपने जीवन में लागू करता है, उसके लिए पाप पर विजय पाना कठिन नहीं होता। क्योंकि बाइबल कहती है:

परमेश्वर के वचन को सीखना कभी मत छोड़ो

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 5

1 यूहन्ना 3:9
“जो कोई परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है, वह पाप नहीं करता,
क्योंकि उसका बीज उसमें बना रहता है; और वह पाप कर ही नहीं
सकता, क्योंकि वह परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है।”

मेरी प्रार्थना है कि हम सब परमेश्वर के वचन की शक्ति को समझें। क्योंकि यदि हम वचन को अपने भीतर अस्वीकार करते हैं, तो हम अपने ही जीवन से दूर हो जाते हैं।

इसलिए मैं आपको प्रोत्साहित करता हूँ—आप जो यह पढ़ रहे हैं—परमेश्वर के वचन को सीखने से कभी मत थकिए। प्रतिदिन बाइबल पढ़िए। क्योंकि आप नहीं जानते कि वह वचन आपके भीतर कैसे काम कर रहा है। आप केवल उसे सीखते रहें और उसका पालन करते रहें। भले ही आज आपको कोई परिवर्तन न दिखे, पर विश्वास रखें कि वह अपने तरीके से कार्य कर रहा है। समय के साथ आप स्वयं अपने आज और अपने कल के बीच अंतर देखेंगे।

परमेश्वर आपको आशीष दे।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

परमेश्वर के वचन को सीखना कभी मत छोड़ो

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 6

Share on:
WhatsApp